विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग-नवम्

विषय-हिन्दी

।। अभ्यास-सामग्री ।।

पाठ-4 सांवले सपनों की याद

गद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

आप दी गई सामग्री को ध्यान पूर्वक पढ़ें और अपनी कांपी में लिखकर संचित करें ।

हल सहित प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हुजूम मौत की खामोश वादी की तरफ़ अग्रसर है। कोई रोक सके, कहाँ संभव है। इस हुजूम में आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कंधों पर, सैलानियों की तरह अपने अंतहीन का बोझ उठाए। लेकिन यह सफ़र पिछले तमाम सफ़रों से भिन्न है। भीड़-भाड़ की ज़िंदगी और तनाव के माहौल से सालिम का यह आखिरी पलायन है। अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो ज़िंदगी का आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे, तो वह भी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!

   (i) पहली पंक्ति में 'खामोश वादी' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? सालिम अली आगे-आगे किस रूप में चल रहे हैं?

   उत्तर श्मशान घाट के लिए, क्योंकि वहाँ का वातावरण उदास और शांत होता है। सालिम अली आगे-आगे पार्थिव शरीर के रूप में चल रहे हैं।

   (ii) अंतहीन सफ़र क्यों कहा गया?

   उत्तर किसी भी व्यक्ति की सभी यात्राओं का अंत होता है, लेकिन मृत्यु के रूप में यात्रा पर निकलने वाले व्यक्ति की यात्रा का अंत नहीं होता। सालिम अली भी अपनी विभिन्न लंबी यात्राओं के बाद कभी-न-कभी घर वापस आते थे, पर निधन के बाद किसी के भी वापस आने की कोई उम्मीद नहीं होती, इसलिए इसे अंतहीन सफ़र कहा गया है।

   (iii) सालिम अली को वन-पक्षी क्यों कहा गया?

   उत्तर वे हमेशा जंगलों में पक्षियों की तरह स्वतंत्र विचरण करते रहते थे।

2. पता नहीं, कब वृंदावन की पूरी दुनिया संगीतमय हो गई थी? पता नहीं, यह सब कब हुआ था? लेकिन कोई आज भी वृंदावन जाए, तो नदी का साँवला पानी उसे पूरे घटना-क्रम की याद दिला देगा। हर सुबह, सूरज निकलने से पहले, जब पतली गलियों से उत्साह भरी भीड़ नदी की ओर बढ़ती है, तो लगता है जैसे उस भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा और बंसी की आवाज़ पर हर किसी के कदम थम जाएँगे। हर शाम सूरज ढलने से पहले, जब वाटिका का माली सैलानियों को विदाई देगा तो लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में वो कहीं से आ टपकेगा और संगीत का जादू वाटिका के भरे-पूरे माहौल पर छा जाएगा। वृंदावन कभी कृष्ण की बाँसुरी के जादू से खाली हुआ है क्या!

   (i) नदी का साँवला पानी पर्यटकों को किन घटनाक्रमों की याद दिलाता है?

   उत्तर वृंदावन में यमुना का साँवला पानी कृष्ण की लीलाओं की याद दिलाता है। कृष्ण ने यमुना के किनारे ही अपनी अनेक रास लीलाएँ की थीं। ग्वालों के साथ मिलकर माखनचोरी तथा यमुना के छायादार कदंब के नीचे आराम किया था।

(ii) **वृंदावन में संध्या समय क्या अनुभूति होती है और क्यों?**

उत्तर वृंदावन में संध्या समय सभी को अनुभूति होती है कि कहीं से भी कृष्ण आ जाएँगे और अपनी मधुर बाँसुरी बजाने लगेंगे। कहा जाता है कि आज भी संध्या समय वहाँ का वातावरण संगीतमय हो जाता है।

(iii) **उपर्युक्त गद्यांश की भाषा-शैली कैसी है?**

उत्तर उपर्युक्त गद्यांश की भाषा लालित्यपूर्ण खड़ी बोली है और इसकी शैली चित्रात्मक है।

3. जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे। बचपन के दिनों में, उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली, नीले कंठ की वह गौरैया सारी ज़िंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ़ ले जाती रही। ज़िंदगी की ऊँचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं। वो लॉरेंस की तरह नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

(i) **जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली एक पहेली क्यों बने रहेंगे?**

उत्तर जटिल प्राणी से तात्पर्य जटिल ढंग से सोचने वाले व्यक्तियों से है। जटिल प्राणी मानते हैं कि व्यक्ति में कोई महानता, विशिष्टता या अनोखापन हो—तभी वे महान हो सकते हैं, लेकिन सालिम अली बहुत सीधे-सादे, सरल आदमी थे। जटिल स्वभाव वाले लोगों को सरल स्वभाव वाले सालिम अली की महानता समझ नहीं आ सकती। इसलिए सालिम अली उनके लिए पहेली बने रहेंगे।

(ii) **किस घटना ने सालिम अली के जीवन को पक्षियों की दुनिया की ओर मोड़ा?**

उत्तर बचपन में एक बार सालिम अली की एयरगन से एक नीले कंठ वाली गौरैया घायल होकर गिर पड़ी। इसी मार्मिक घटना ने सालिम अली के जीवन को पक्षियों की दुनिया की ओर मोड़ दिया।

(iii) **डी०एच० लॉरेंस और सालिम अली में क्या समानता थी?**

उत्तर दोनों ही प्रकृति से गहरा लगाव रखते थे। दोनों ही प्रकृति-प्रेमी थे। दोनों महान व्यक्तियों का स्वभाव भी सरल, सीधा और भोला-भाला था।

4. मुझे नहीं लगता, कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व, खुद सालिम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं। यह उनकी भूल है, ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वे प्रकृति की नज़र से नहीं, आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज़ का मधुर संगीत सुनकर अपने भीतर रोमांच का सोता फूटता महसूस कर सकता है?

(i) **पक्षियों को आदमी की नज़रों से देखने को सालिम अली ने भूल क्यों माना है?**

उत्तर सालिम अली पक्षियों को पक्षियों की ही नज़रों से देखना उचित समझते थे। उनका मानना था कि आदमी पक्षी-जगत की भावनाओं को समझने में तब तक समर्थ नहीं हो सकता, जब तक स्वयं उनकी तरह न सोचे।

(ii) **पक्षियों की आवाज़ को लेखक ने क्या कहा है?**

उत्तर पक्षियों का कोलाहल, कलरव और चहचहाहट समूचे वातावरण में मधुर संगीत उत्पन्न करता है। उनका संगीत मनुष्य के अंतर्मन को बहते हुए झरने की तरह रोमांचित करता है।

(iii) **हमें प्रकृति एवं पक्षियों को किस दृष्टि से देखना चाहिए?**

उत्तर हमें प्रकृति एवं पक्षियों को उनकी ही दृष्टि से देखना चाहिए। तभी मनुष्य उन्हें गहराई से समझ सकता है अन्यथा उन्हें समझना असंभव है। हमें प्रकृति और पक्षियों के भावों को अपने अंतर में महसूस करना चाहिए। ऐसा तभी संभव हो सकता है, जब हम उनको अपनी नहीं, बल्कि उनकी ही नज़र से सदैव देखने का प्रयास करें।